Lecture Series No:- 64

online class
Date - 3/7/2020
Time - 10:50 to 11:50 AM

TOPIC.
Moral Judgement.

Dr. Sunita Kumari
Depart. of philosophy
B.A part - II
paper - (5.)
A.N.D. college shahpur patory
Samastipur.

Ans:-) नैतिक निर्णय का स्वरूप (Nature of moral judgement) :-)

नैतिक निर्णय का कार्य है मानव द्वारा सम्पादित ऐच्छिक क्रिया का नैतिक मापदण्ड के आधार पर औचित्य अथवा अनौचित्य का निर्धारण करना। अतः हम कह सकते हैं कि नैतिक निर्णय के अन्तर्गत किसी कर्म के ऊपर उचित या अनुचित, शुभ या अशुभ, सत् अथवा असत् की दृष्टि से विचार करना। अतः नैतिक निर्णय एक अत्यन्त ही जटिल मानसिक क्रिया है —

P.T.O.

जिसके किसी कर्म को या तो नैतिक गुण से विभूषित किया जाता है। अथवा उसके विपरीत गुण को। आरोपित किया जाता है। ऐसे विचार अथवा मान्यता पूर्व से ही मस्तिष्क में विराजमान रहते हैं।

नैतिक निर्णय किसी (किसी मनुष्य) किसी मनुष्य के द्वारा ही किया जाता है।

नैतिक निर्णय में निम्नलिखित तथ्यों का रहना अनिवार्य है।

(i) निर्णयकर्त्ता (Subject) :-) नैतिक निर्णय किसी मनुष्य के द्वारा सम्पादित आचरण पर ही प्रदान किया जाता है। मानव कभी

नैतिक निर्णय किसी मनुष्य के द्वारा सम्पादित आचरण पर ही प्रदान किया जाता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(3)

मानव कभी निष्क्रिय नहीं होता, बल्कि वह हमेशा सक्रिय रहता है। अतः इसी के क्रिया पर निर्णय संभव है।

फिर मानव द्वारा सम्पादित क्रिया के ऊपर नैतिक निर्णय करना की आवश्यकता होती है।

(ii) विषय (object) :- जब निर्णय के लिए निर्णयकर्ता की आवश्यकता होती है तो.

जब नैतिक निर्णय के लिए ∴ निर्णयकर्ता की आवश्यकता होती है। तो निर्णयकर्ता किसी विषय पर ही निर्णय देगें वह विषय कर्म है।

परन्तु सभी कर्म नैतिक निर्णय का विषय नहीं होता, बल्कि ऐच्छिक कर्म ही नैतिक निर्णय के विषय होते हैं। अतः ऐच्छिक कर्म का रहना नैतिक निर्णय के लिए आवश्य है।

END

T.O.